एक सफर सवालों के बीच

❑ जरफिशां जैदी

अपने निकट परिवेश को मानवीय नजरिये से देखने भर की बात है कि जीवन के अनेक मर्मस्पर्शी प्रसंग खुलने लगते हैं । ऐसे में यदि आप किसी के दुख-दर्द में सहभागी बनते हैं, किन्हीं जरूरत मन्दों की मदद करना चाहते हैं या कोई सामाजिक कार्यभार तय करते हैं तो वह भी सहज नहीं होता-उसमें भी कई अवरोध और चुनौतियां आती हैं । लेकिन हमारा संकल्प दृढ़ है और नजरिया साफ है तो अवरोधों से पार पा सकते हैं, चुनौतियों से जूझ सकते हैं । यह प्रक्रिया खुद हमारे व्यक्तित्वान्तरण की जमीन है । प्रस्तुत अनुभव इसका एक साक्ष्य है - जीवन्त और मार्मिक, प्रेरक तो यह है ही ।

मेरे घर से कुछ दूरी पर बहुत से घरों में ऐसे परिवार रहते हैं जिनके भरण-पोषण की थोड़ी या बहुत जिम्मेदारी छोटे-छोटे बच्चों के कंधों पर है। दिन में 7-8 घण्टे नगीनों पर जिला करके या कुछ और छोटी-मोटी मजदूरी करके इतना कमा पाते हैं कि वो और उनका परिवार जैसे-तैसे अपना गुजारा कर सके। उन्हीं में से कुछ बच्चे घर पर टी.वी. देखने आते थे । उन दिनों महाभारत धारावाहिक आता था जिसे देखकर बच्चे महाभारत के युद्ध का खेल खेलते। एक बच्चा अर्जुन बन जाता और दूसरा दुर्योधन । मोटे तिनकों के तीर बना लेते और एक दूसरे पर चलाते । एक दिन अचानक एक तीर आसिफ की आंख पर लगा । और उसकी आंख बुरी तरह घायल हो गई । तीन दिन बाद मुझे पता चला। मैं उसे देखने गई और देखकर हैरान रह गयी । आसिफ की आंख के चारों तरफ इतनी सूजन आ गयी थी कि आंख दिखाई नहीं दे रही थी । लगातार पानी निकल रहा था और वो दर्द के मारे कराह रहा था । किसी तरह उसे अस्पताल भेजा । डाक्टर ने देख कर कहा आपने देर कर कर दी । बच्चें की आंख खराब हो चुकी है। निकालनी पड़ेगी । आसिफ हमेशा के लिए अपनी आंख खो बैठा। क्यों ?

एक अपराध बोध मन में घर कर गया । मैं इन बच्चों के लिए कुछ करुंगी । कुछ महीने इसी उधेड़बुन में निकल गये और एक दिन दोपहर को मैने गुन्चा को बुलाकर बात की। गुंचा मेरी हम उम्र थी । उसकी शादी हो गयी थी मगर किसी वजह से वो मायके में ही रह रही थी ।

मैनें पूछा गुन्चा क्या तुम पढ़ना चाहती हो ।

- हां मैं भी तुम्हारी तरह पढ़ना चाहती थी । मगर मां-बाप ने कभी स्कूल नहीं भेजा । बब्बा पापा को कहते थे कि लडकियां पढ़ने से बिगड़ जाती है । जैसे कि तुम्हारी फुफीजान।* फिर मेरी शादी कर दी ।

मैंने कहा - तो क्या हुआ । अगर तुम चाहो तो अब भी पढ़ सकती हो ।

कैसे ?

- बस एक घण्टे रोज तुम मेरे घर पर आ जाया करो ।

- अच्छा ।

- वो हां करके चली गई । दूसरे दिन वो नहीं आई । शायद उसे मेरा प्रस्ताव पसन्द नहीं आया था । तीन दिन बाद जब मैं कालेज से लौटी । वो कापी, पेन्सिल हाथ में लिए सीढ़ियों पर बैठी मेरा इंतजार कर रही थी । मैं कुछ बोलूं उससे पहले ही कहने लगी - मैं तीन दिन नहीं आ सकी । आज तुमसे पढ़ने आई हूँ ।

मैं उसे अन्दर लेकर गयी, बिठाया । कुछ देर बाद जब मैं आई तो वो मेरी किताबों को खोलकर देख रही थी । मेरे आने पर उसने कॉपी पेन्सिल हाथ में ले लीं और पूछा - जरफिशां तुम्हारे यहां रोज अखबार आता है ? तुम सब उसमें क्या पढ़ते हो ?

- दुनियॉ भर की खबरें ।

- क्या मैं कभी पढ़ पाऊंगी ।

- बिल्कुल, क्यों नहीं ।

उसने कॉपी पेन्सिल मेरे आगे कर दी । उस दिन मैंने उसे हिन्दी के चार अक्षर लिख कर दिए । वो उन्हें देखकर लिखने लगी। आधे घण्टे बाद उसने मुझे पूरा एक पेज उन्हीं अक्षरों का लिखकर दिखा दिया । मेरे पूछने पर वो बता रही थी ।

- अब मैं घर जाऊं ? उसने पूछा ।

- अच्छा । कल आ जाना ।

---

* फुफ्फी ने प्रेम विवाह किया है ।

मेरी तरफ कॉपी करके बोली - और नए लफ्ज लिख दोगी क्या ?

मैंने चार अक्षर और लिख दिए । दूसरे दिन आई तो आठों अक्षर बगैर देखे लिखने लगी । तकरीबन हफ्ते-दस दिन में वो 'कमल', 'सजल', 'घर' आदि शब्द पढ़ने लगी । फिर मैनें उसे मात्राएं बतानी शुरू कर दी थीं । धीरे-धीरे वो अपने आप शब्दों में पढ़ने लगी । मैं उससे 5-6 कठिन शब्द लिखवाती, उनका अर्थ बताती और कहानी की किताब में से एक पेज पढ़वाती । एक दिन जब मैं उसे पढ़ाने लगी तो पास में रखा हुआ अखबार उठा कर बोली - जरफिशां इसमें से लिखवाओ ।

मैं अखबार में से उसे लिखवाने लगी । एक-दो दिन बाद उसने कहानी की किताब भी पढ़ना छोड़ दिया । और अखबार की एक खबर रोज पढ़कर सुनाने लगी । बस आगे उसने जो भी भाषा सीखी वो अखबार से ही सीखी। रोज एक खबर पढ़कर सुनाती । मैं उस खबर में से कठिन शब्दों को लिखवाती । फिर वो अखबार का पेज घर ले जाती और खाली समय में पढ़ती रहती । दो महीने भी पूरे नहीं हो पाये थे कि एक दिन आकर कहने लगी - जरफिशां मैं तुमसे हिसाब और अंग्रेजी पढ़ना शुरु करती मगर कल मुझे ससुराल जाना है। जाने का बिल्कुल मन नहीं कर रहा मगर जाना तो पड़ेगा । मैंने उसे दो-तीन मैगजीन और कहानी की किताब दी और कहा - जब भी ससुराल में वक्त मिले इन्हें पढ़ती रहना । और गुन्चा कल जब तुम्हारे औलाद हों तो प्लीज उसे जरूर स्कूल भेजना। शाम को वो अपने कृशकाय बेरोजगार पति के साथ चली गई।

उसके जाने के बाद मेरे सालाना इम्तहान आ गए और दो-तीन महीने उसमें गुजर गए। जून 92 में छुट्टियां आई और मैंने फिर से पढ़ाना शुरू करने के बारे में सोचा । घर के पास ही एक परिवार रहता था जिनके 7 बच्चे हैं और उनमें से दो बड़े बच्चे शाहिद (12) और पापू (11) नगीनों परजिला का काम करते थे । उस परिवार से हमारा अच्छा परिचय था । एक दिन मैंने उनकी मां से कहा- शायदा बाजी, अगर आप अपने बच्चों को हमारे यहां भेज दें तो मैं उन्हें पढ़ा दूंगी ।

मैं हैरत से उसे सुन रही थी । 10 साल के बंटी की गलती है या 40 साल के प्रीतम बनिये की। समझ नहीं आता । वो अपने एक वाक्य से बच्चों की भावनाओं को कितना खतरनाक मोड़ दे रहा है । क्यों, वो जानता है । ना जाने कितने प्रीतम मिलकर हमारे मुल्क की इस पीढ़ी के दिलों में नफरत के बीज बो रहे हैं ।

उन्होंने दु:खी होते हुए जवाब दिया - मै तो चाहती हूँ कि मेरे बच्चे भी स्कूल जाएं मगर क्या करूं । इनके अब्बा पूरा खर्चा नहीं देते इसलिए इन दोनों को काम पर बैठाना पड़ा। अगर तुम इन्हें पढ़ा दोगी तो मुझ पर अहसान करोगी ।

- जब उनका काम खत्म हो जाए तो घर भेज दीजिएगा।

मैं कह कर आ गई । दूसरे दिन शाम को शाहिद और पापू दोनों घर पर आ गए । कारखाने से सीधे आए थे इसलिए उनके हाथ-पैर और कपड़ों पर बरी के छीटें थे । मैंने पापू की तरफ देखते हुए कहा,

- घर पर जाकर हाथ-मुंह धोकर आया करो । अगर सफाई से रहोगे तो तुम अच्छे लगोगे ।

- घर पर पानी साबुन नहीं था ।

उसने सपाट जबाव दिया । और मुझे निरूत्तर कर दिया। मैंने जल्दी से शाहिद की तरफ देखते हुए बात संभालने की कोशिश की और वाश बेसिन की तरफ इशारा करते हुए कहा, अरे ! कोई बात नहीं यहां धो लिया करो।

- नहीं । सख्त लहजे में शाहिद ने जवाब दिया और पापू का हाथ पकड़ कर ले गया । मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया था । दूसरे दिन शाम हुई मगर वो नहीं आए। इन्तजार करते हुए एक घण्टा गुजर गया । शायद वो अब कभी नहीं आएं । तभी दरवाजे पर दस्तक हुई । मैंने हड़बड़ाहट में दरवाजा खोला, देखा, दोनों हाथ-मुंह धोकर, बाल बना कर, साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए चुपचाप खड़े थे । मैं दरवाजे से हट गई और उन्हें अन्दर आने को कहा । हम तीनों दरी पर चुपचाप बैठ गए । मन में बार-बार ख्याल आ रहा था दोनों ने कारखाने से आकर मौहल्ले के हैण्डपंप से पानी भरा होगा। फिर साबुन का इंतजाम किया होगा, तब कहीं जाकर इनका हाथ-मुंह धुला होगा । मैं अब यह कहने की स्थिति में नहीं थी कि वो अच्छे लग रहे हैं । बगैर कुछ बोले उठी । छोटे भाई के बैग में से दो कॉपी और पेन्सिलें लाकर उन्हें दे दीं । फिर तीनों चुपचाप बैठ गए ।

आखिर फिर मैने शाहिद की तरफ देखते हुए कहा - तुम क्या करते हो ?

- पन्ने पर जिला करता हूँ ।

- जिला माने ?

- आप इतना भी नहीं जानती । पापू ने हंसते हुए कहा।

- नहीं

- पन्ने के घाटों में हम चमक लाते हैं । शाहिद ने लफ्जों को जमा-जमा कर बताया ।

मैंने कहा - अच्छा-अच्छा पटसान पर घिसके ना ।

दोनों फिर एक-दूसरे को देखकर हंसने लगे ।

- पटसान नहीं परसान । उनके चेहरे पर अजीब सी चमक आ गई थी जो मुझे संतोष दे रही थी ।

- मुझे शुरू से समझाओ, नगीने कैसे बनते हैं ?

- खड़ पहाड़ों से निकलती है । सिर्फ पहाड़ों से यानि कि जैसे आप समझ लो, पन्ने के मोटे-मोटे डले होते हैं । उन बदसूरत डलों को हम खूबसूरत शक्ल देते हैं । इसके लिए खड़ की पहले कटाई होती है । उसके अन्दर से अच्छा हिस्सा निकाला जाता है और ड़लों को छोटा किया जाता है । फिर वो टेढ़े -मेढ़े होते हैं, उनको ठीक करते हैं यानि की घाट बनाते हैं । उन पोटों की सदाई होती है । सदाई यानि की उसमें अड्डे, शक्करपारे काटे जाते हैं । उसके बाद हम उस पर जिला करते हैं। फिर पलटाई, फिर जिला । तब कहीं नगीना तैयार हो पाता है।

मैने पूछा - फिर ?

फिर क्या, जिसका नम्बर होता है वो ले जाता है ।

-फिर ?

फिर वो आगे बेच देता है । फिर वो बाहर चला जाता है, बाहर जाकर क्या होता, मुझे पता नहीं ।

शाहिद की बात पूरी खत्म भी नहीं हुई थी कि पापू बोला - बाजी यह काम आसान नहीं है । बहुत मेहनत करनी पड़ती है । जब मैं शुरू में सीखने लगा तो घण्टों कारखाने में बैठकर देखना पड़ता था, फिर कहीं जाकर उस्ताद ने काढ़ी हाथ में दी है । अब तो मैं भी बहुत खूबसूरत नगीने बना लेता हूं ।

- आप क्या करती हैं ? शाहिद बीच में बोला ।

- पढ़ती हूँ ।

- नहीं काम क्या करती हैं ? मैं चुप हो गई ।

- अच्छा सिर्फ पढ़ती है । काम नहीं करती ?

हम तीनों के बीच की खामोशी टूट चुकी थी । मैंने कहा - अब कल से पढ़ाई शुरू करेंगे ।

वो दोनों कॉपी-पेन्सिल हाथ में पकड़कर उठ गए ।

- बाजी कल हम इसी वक्त आ जाएंगे । अच्छा । खुदा हाफिज ।

दूसरे दिन वो दोनों सही वक्त पर आ गए । मैंने उन्हें बैठाया और पूछा - पापू क्या तुम्हें गिनती आती है ?

- हां ।

- कहां तक ?

- सौ तक ।

- लिख भी सकते हो ?

- हां लिख कर दिखाऊं ?

- अच्छा 16 लिखकर दिखाओ ।

उसने जल्दी से कॉपी खोलकर 16 लिख दिए । मैंने फिर 25, 28, 42, 77,. 88 लिखवाए । उसने सही लिख दिए । मैने कापी लेकर 45 लिखे और शाहिद की तरफ देखते हुए पूछा - ये कितने हैं ?

- पत्तालीस, पापू जोर से बोला ।

49 लिखकर मैने पापू की तरफ देखकर कहा - आप नहीं हां, शाहिद आप बताइए ।

पता नहीं उसकी आवाज की सख्ती से मैं सकपका गई और बात बदलते हुए कहा - पापू आपको कैसे आता है?

- मुझे तो क, ख, ग भी आता है ।

- मैरे दुबारा अपना सवाल दोहराया - कैसे आता है ?

- 3-4 साल पहले मैं स्कूल जाता था, फिर छोड़ा ।

- क्यों ?

- 2-3 महिने गया फिर पापा ने हटा दिया।

- क्यों ?

- काम सीखने के लिए ।

- शाहिद जब पापू को भेजा तो पापा ने तुम्हें भी स्कूल भेजा होगा ?

वो एकदम फट पड़ा - पापा ने कभी मुझ पर ध्यान नहीं दिया। जब बहुत छोटा था तभी से कारखाने में बैठा दिया । स्कूल कहां से जाता । स्कूल के लिए फीस, कपड़े कहां से आते । फिर काम सीखने पर उस्ताद पैसे भी देने लगे । उससे अम्मी घर खर्च चलाती । मैं वैसे पढ़ता । वो फिर चुप हो गया।

- कोई बात नहीं शाहिद ।

- कोई बात नहीं ।

उसने मेरे लफ्जों को अजीब से अन्दाज में दोहराया ।

- कोई बात कैसे नहीं । शीबा स्कूल जाती है मुझसे छोटी होकर भी, वो पढ़ लेती है। जब कभी लड़ाई होती है। वो मुझे चिढ़ाती है - भाईजान, तू इतना बड़ा हो गया मगर अपना नाम भी नहीं लिख सकता । मैं मैं कुछ बोल...।

उसकी आवाज भर्रा गई थी । फिर एक खामोशी छा

गई। कापी में लिखे 45 उसके आंसुओं से धुंधले पड़ गए थे। थोड़ी देर बाद मैंने उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा - शाहिद दिल छोटा मत करो । तुम इतने अच्छे नगीने बनाते हो, शीबा तो नहीं बना सकती ना । रही नाम लिखने की बात । तो वो तुम 10-15 दिन में सीख जाओगे । मगर शीबा 10-15 दिन में तुम्हारी जैसी कारीगर नहीं बन सकती । देखो, तुम कितने अच्छे और मेहनती बच्चे हो । अभी से कमाने लगे हो। घर खर्च में हाथ बंटाते हो । अम्मी को परेशान नहीं होने देते। पढ़ाई का क्या है, अगर तुम सोच लेागे तो एक दिन जरूर पढ़ जाओगे ।

उसने पहली बार कॉपी पर से निगाहें उठाकर मेरी तरफ देखा। निगाहें मिलते ही मैने पूछा - चाय पियोगे ?

- नहीं ।

- नहीं क्यों ? मैं अभी बना कर लाती हूं ।

यह कहते हुए उठी थोड़ी देर में 3 कप चाय और एक प्लेट में कुछ बिस्कुट ले आई । प्लेट मैंने उनके सामने रख दी। पापू ने बिस्कुट उठा लिया । मैंने फिर शाहिद की तरफ कर दी। रहने दो बाजी । ले लो ना । उसने चुपचाप एक बिस्कुट उठाया । ये सब आपको खाने हैं । कह कर मैं चाय पीने लगी।

- शाहिद आपके पापा भी नगीनों का काम करते हैं ?

- नहीं । सिनेमा हॉल में मशीन चलाते हैं ।

- अच्छा अब आप दोनों घर जाइए । कल इसी वक्त आ जाना।

- जी अच्छा बाजी । आपसे एक बात कहनी थी । हां, अम्मी ने पुछवाया है कि आप हमारे छोटे भाइयों को भी पढ़ा देंगी क्या?

- हां, हां पढ़ा दूंगी । कल उन्हें भी लेते आना ।

अगले दिन शाहिद और पापू के साथ बंटी, शाजी और सिकन्दर भी आ गए । बात करने पर पता चला कि उन्हें बिल्कुल पढ़ना नहीं आता । पहले मैंने पापू को बताया कि 5 और 7 जोड़ने पर 12 कैसे आता है। एक बार बताने के बाद मैने दुबारा बताया। तीसरी बार बताने लगी तो बीच में ही बोला - रहने दो, समझ में आ गया ।

- रहने दो नहीं रहने दीजिए ।

- क्यूं ?

- क्योंकि हमें तमीज से बोलना चाहिए ।

- तमीज क्या ? शाजी बीच में बोला ।

- अच्छी तरह से बोलना । शाहिद ने उसे समझाने की कोशिश की ।

- हैं बाजी । शाजी शर्माते हुए हंसने लगा ।

- पापू आपकी कॉपी में मैने पांच सवाल लिख दिए हैं। अब उधर बैठकर जैसे बताया है वैसा करिए । और शाहिद, बंटी, शाजी, सिकन्दर को मैंने अपने पास बैठाकर गिनती सिखाने लगी। सबकी कॉपी में 1-5 तक गिनती लिखकर उन्हें अलग-अलग समझा दिया । पांच-दस मिनट में ही शाहिद ने मुझे बगैर देखे लिखकर बता दिया । थोड़ी देर में ही शाजी बोला - बाजी मैने भी लिख लिया ।

- पूछ लो ।

- नहीं, नहीं, पूछ लीजिए ।

मैं हंसने लगी, उसने भी 5 तक लिखना सीख लिया था मगर बंटी को थोड़ा समय लगा और सिकन्दर तो 2 ही नहीं लिख पा रहा था । मैंने उसे कहा आप आज सिर्फ 1 सीखिए। शाहिद को मैने 10 तक लिखना बताया।

कुछ ही दिनों में शाहिद ने 100 तक गिनती सीख ली थी। एक दिन अकेले में आकर बोला - मुझे तो आता है। मैं तो हासिल के भी कर सकता हूं ।

- नहीं अभी आप कुछ सवाल और करो ताकि बड़ी संख्याओं को जोड़ने में गलती नहीं करो ।

दोनो भाई बहुत जल्दी सीख रहे थे ।

- अब मैं आप सब को हिन्दी के अक्षर लिखना सिखाऊंगी।

मैने एक की कॉपी में 'क' लिख दिया ।

- बाजी किताब में से पढ़ाइए ना ।

- क्यों ? मैं आपको कॉपी में ही बता दूंगी ।

- किताब में तो कबूतर की और बहुत सारी फोटो भी होती हैं ।

- हैं, भाई । शाजी हैरत से बोला ।

उनकी उत्सुकता देखकर बोली - अच्छा कल मैं किताब लेकर आऊंगी ।

अब मैं किताब में से उन्हें अक्षर सिखाने लगी ।

शाहिद और पापू को तीन-चार अक्षर लिखकर समझा देती। वो अपने आप लिखते रहते । सिकन्दर 3 और 4 लिखने का अभ्यास ही कर रहा था । बंटी और शाजी को किताब खोलकर 'क' लिख लिया और कबूतर भी बनाने लगे।

- अच्छा आपको क से और क्या ध्यान आता है ?

शाजी कुछ सोचकर बोला - काढ़ी, कटोरा और कम्बल।

- ठीक है और कम्मो । बंटी बीच में जोर से बोला ।

सब एक साथ हंसने लगे ।

- कौन कम्मो ?

- हमारे घर के पास रहती है ।

इतने में बंटी फिर बोला - कपिल देव ।

- आप जानते हैं ये कौन हैं ?

- हां अच्छी तरह , क्रिकेट का खिलाड़ी है ।

- आपको कपिल देव अच्छे लगते हैं ।

- नहीं ।

- मुझे तो इमरान अच्छा लगता है ।

मैं चुप हो गई । बंटी लगातार बोल रहा है - बाजी आपको पता है अभी हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का मैच हुआ था। उस दिन उस्ताद ने कारखाने की छुट्टी कर दी। हम सबने दिन भर मैच देखा । पाकिस्तान जीत गया था। पूरे मोहल्ले में मिठाई बटी ।

- आपको हिन्दुस्तान के जीतने की भी इसी तरह खुशी होती है ।

- नहीं, बिल्कुल नहीं । दुख होता है ।

- पाकिस्तान क्या है ?

- पता नहीं, लेकिन वहां सब मुसलमान रहते हैं । पापू बीच में बोला ।

- आपकी बातों से मुझे लग रहा है कि आपको अपने वतन से बिल्कुल मोहब्बत नहीं है । हिन्दुस्तान में पैदा हुए हो, पलकर बड़े हुए हैं लेकिन यहीं से आपको कोई लगाव महसूस नहीं होता । आपकी अपनी टीम हारती है और आपको अच्छा लगता है । पांचों लिखना छोड़कर मेरी तरफ देखने लगे, मेरे गुस्से की वजह उनके समझ नहीं आ रही थी । सब चुप हो गए।

थोड़ी देर बाद बंटी बोला - जब पाकिस्तान हार जाती है तो मैं 3-4 दिन तक प्रीतम बनिये के सौदा लेने नहीं जा सकता । जाते ही चिढ़ाता है क्यों मियांजी, तुम्हारी पाकिस्तान हार गई । तब मुझे बहुत शर्म आती है । इसलिए जब हिन्दुस्तानी टीम हारती है तो मैं जानबूझकर उसकी दुकान पर जाता हूं और कहता हूँ देखा, तुम्हारी टीम को कैसा हराया । बाजी आप जानती नहीं है पाकिस्तान के हारने पर घर से निकलना मुश्किल हो जाता है ।

मैं हैरत से उसे सुन रही थी । 10 साल के बंटी की गलती है या 40 साल के प्रीतम बनिये की । समझ नहीं आता। वो अपने एक वाक्य से बच्चों की भावनाओं को कितना खतरनाक मोड़ दे रहा है । क्यों वो जानता है । ना जाने कितने प्रीतम मिलकर हमारे मुल्क की इस पीढ़ी के दिलों में नफरत के बीज बो रहे हैं । पास के कारखाने में किसी शायर की गजल बज रही थी-

मेरा खुलुस है जब तक यहां की मिट्टी में ।

तेरे फरेब का पौधा हरा नहीं होगा।

वो बच्चे सिर्फ शायदा बाजी के ही नहीं हैं बल्कि उनके प्रति इस समाज का भी कुछ फर्ज बनता है। आज अगर हम उनकी परवरिश पर ध्यान देगें तो कल यही बच्चे इस समाज और इस राष्ट्र के विकास में भागीदार बन सकेंगे । कम से कम हम उन्हें अक्षर ज्ञान तो दे दें ताकि वो आगे खुद पढ़ सकें ।

मैनें सहज होते हुए कहा - बंटी हिन्दुस्तान हमारा अपना वतन है, ये हमारा घर है । फिर अपने ही घर में परायापन क्यों महसूस करते हो ।

बहुत कुछ कहने का मन था। मगर बच्चों की मेरी बातों में तनिक भी दिलचस्पी नहीं थी। बंटी मेरी बातों से बेखबर अपनी कॉपी में चांद-तारा बना रहा था। क्या मेरे कहने का कुछ असर होगा इन पर ? पांचों पढ़कर जा चुके थे । इतने में डैडी आए।

- इम्तहान की तैयारी कैसी चल रही है ?

- अच्छी चल रही है ।

- कॉलेज में पढ़ाई सही हो रही है ?

- जी ।

- कॉलेज में शायद तुम्हारा केमिस्ट्री का कोर्स पूरा नहीं हो पाए क्योंकि मैडम ने काफी लेट ज्योइन किया था ।

- जी वो अब एक्सट्रा क्लॉस ले रही हैं ।

- मैंने एक केमिस्ट्री के सर से बात की है । कल से वो तुम्हें पढ़ाने आएंगे ।

- जी कितने बजे ?

- सात-आठ बजे ।

- अच्छा ।

मैं बच्चों को 5-6 बजे तक पढ़ाने लगी और 7-8 बजे से सर से खुद केमस्ट्री पढ़ती । अब शाहिद पापू अक्सर लेट होने लगे क्योंकि उनकी कारखाने से छुट्टी ही 5 बजे होती । बच्चों को पढ़ते हुए 20 दिन गुजर चुके थे । शाहिद और पापू जोड़-बाकी आसानी से करने लगे । हिन्दी के लव्ज भी अटक-अटक कर पढ़ लेते । बंटी और शाजी को 100 तक की

गिनती आ गई और हिन्दी अक्षरों को थोड़ा बहुत पहचानने लगे। सिकन्दर अभी 5 तक गिनती ही सीख पाए थे।

- शाहिद 5 का पहाड़ा सुनाओ ।

- पांच एकम पांच, पांच दूनी दस, पांच तीया पन्द्रह..।

दरवाजे पर दस्तक हुई । खोलकर देखा । सामने शब्बीर सर खड़े हैं ।

- आदाब सर ।

- आदाब । आज आप जल्दी आ गए ।

- हां । मुझे कहीं जाना था । सोचा पहले तुम्हें पढ़ा दूं फिर यहीं से सीधा चला जाऊंगा । क्या कर रही थी ?

- जी, वो मैं ....

मेरी बात अधूरी ही थी कि उनकी नजर बच्चों पर पड़ी। त्यौरियों पर बल देते हुए बोले - कौन हैं ये गन्दे बच्चे, इन्हें यहां क्यों बैठा रखा है ?

मैं चुपचाप खड़ी रही ।

- क्या पूछ रहा हूँ ?

मैंने बच्चों की तरफ अपना चेहरा कर लिया और बोली - इन्हें पढ़ाती हूं ।

- पढ़ लिए कभी कुछ सामान उठाकर और ले जाएंगे। कहते हुए धम से कुर्सी पर बैठ गए ।

- आप लोग जाइए कल इसी समय आ जाइयेगा ।

सहमें हुए बच्चों ने जल्दी-जल्दी अपना सामान उठाया और बगैर कुछ बोले चल दिए । दरवाजे से निकलते हुए पापू ने पीछे मुडकर देखा । मेरी निगाहें मिली और झुक गईं ।

- चलो अपनी किताब लाओ। आज तुम्हें ''बैन्जिन'' पढ़ाऊंगा ।

उसके बाद वो एक घण्टे तक बोलते रहे । मगर मुझे एक शब्द भी सुनाई नहीं दिया । मम्मी चाय ले आई। चाय पीते हुए बोले - कहां ध्यान है तुम्हारा ?

- हूं सुन रही हूँ ।

कल इसकी इक्रेशन याद कर लेना । मैने कोई जवाब नहीं दिया ।

अच्छा चलता हूं ।

मन में बार-बार ख्याल आ रहा है कि जब आपके मन में टीचर के प्रति आदर नहीं होता तो आप उनसे कुछ नहीं सीख सकते। फिर चाहे वो आपके सामने कितनी ही विद्वतापूर्ण बातें करें, वह आपके लिए व्यर्थ का प्रलाप है । मेरे मन में अब शब्बीर सर के प्रति कोई आदर या श्रद्धा नहीं बची थी। कुछ सोचकर ऊपर गई और जाते ही कह दिया - डैडी मैं कल से शब्बीर सर से नहीं पढ़ूंगी।

- क्यूं, क्या हो गया ।

- मुझे उनका पढ़ाया समझ नहीं आयेगा । कॉलेज में मैडम अच्छा पढ़ा रही हैं । मेरी तैयारी हो जाएगी ।

- अच्छा ठीक है, ये महीना तो पूरा कर लो।

- नहीं प्लीज डैडी मेरा समय खराब होगा ।

- बच्चों को पढ़ाने से तो तुम्हारा वक्त जाया नहीं होता। अब सर से पढ़ने में वक्त खराब होगा । मम्मी ने खीजते हुए कहा - जब वो नहीं पढ़ना चाह रही तो क्यों जबरदस्ती कर रहे हो ।

- बेटा, मैं कल यूर्निवसीटी जाते वक्त सर से बात कर लूंगा। उस दिन के बाद मैं कभी सर से नहीं मिली ।

दूसरे दिन बच्चे ठीक 5 बजे आ गये । पापू ने बैठते हुए कहा - बाजी आपके सर कितने बजे आएंगे ? हम उनके आने से पहले ... ।

- वो अब नहीं आएंगे । चलो 5 का पहाड़ा सुनाओ।

इस तरह कुछ दिन और गुजर गए । शाहिद और पापू ने 10 तक पहाडे याद कर लिए थे और हिन्दी भी पढ़ने लगे।

- बाजी हमें आपके पास आते हुए डेढ़ महीना हो गया।

- हां ओर देखो इतने कम वक्त में ही आप पढ़ने लगे।

शाहिद अब तो आप अपना नाम लिख सकते हैं ना आराम से।

जी बाजी ।

आज से हम नैतिक शिक्षा की यह किताब पढ़ना शुरू करेंगे। शाहिद यहां तक आप पढ़िए और इसके आगे पापू आप पढ़ेंगे ।

- हां

- पढ़िए । इस चैप्टर का नाम यहां ऊपर लिखा है - अहिंसा।

शाहिद साफ लहजे में पढ़ने लगा । कभी-कभी किसी लव्ज पर अटक भी जाता। फिर आगे का पाठ पापू ने पढ़ा ।

- अच्छा बताइए आप अहिंसा से क्या समझे शाहिद ?

- यही कि हमें झगड़ा नहीं करना चाहिये । किसी को नुकसान नहीं पंहुचाना चाहिए । बाजी अम्मी-पापा तो झगड़ते रहते हैं, तो क्या वो बुरे हैं ? मैं चुप रही ।

- अमिताभ बच्चन कुली में एक साथ इतने लोगों को मारता है तो क्या वो भी बुरा है ? मगर वो नहीं मारता तो वो सब आदमी उसको मार देते । शाजी बीच में बोला।

- अच्छा आज पाठ हमने पढ़ा है उस पर कल सोच कर आइएगा। फिर आपको जो भी लगे वो मुझे आकर बताइएगा। लाइए अब हम गुणा सीखते हैं ।

- बाजी अब ये किताब कब पढ़ेंगे ?

- कल।

इतने में मम्मी डैडी नीचे आ गए ।

- जरफिशां हमें तुमसे कुछ बात करनी है ।

- जी अभी ।

- हां, अभी ।

- अच्छा शाहिद, आप लोग जाइए । कल सही वक्त पर आ जाना और हां में आपकी कॉपी में कुछ गुणा के सवाल लिख देती हूं, कल करके लाना । 5 मिनिट में मैंने सवाल लिखे ।

- अब आप जाइए ।

- अच्छा बाजी, सलाम वालेकुम ।

- वालेकुम अस्सलाम ।

- हां कहिए डैडी, आप क्या कह रहे थे ?

- हम जो कुछ भी तुम्हें समझा रहे हैं तुम्हारे भले के लिए ही समझा रहे हैं । तुम्हारे इम्तहान के दो महीने रह गये हैं । तुम्हें अब उसकी तैयारी करनी चाहिए ।

- मैं तैयारी कर रही हूँ ।

- क्या तैयारी कर रही हो । जब नीचे आओ बच्चों से घिरी बैठी रहती है । मम्मी ने गुस्से से कहा ।

- अब्बू उन्हें तो बस मैं एक घण्टे ही पढ़ाती हूं ।

जरूरत क्या है ? मम्मी ने ऊंची आवाज में कहा।

बहुत जरूरत है । वो बच्चे सिर्फ शायदा बाजी के ही नहीं हैं बल्कि उनके प्रति इस समाज का भी कुछ फर्ज बनता है । आज अगर हम उनकी परवरिश पर ध्यान देगें तो कल यही बच्चे इस समाज और इस राष्ट्र के विकास में भागीदार बन सकेंगे । कम से कम हम उन्हें अक्षर ज्ञान तो दे दें । ताकि वो आगे खुद पढ़ सकें। कल जब ये बच्चे गलत रास्ते पर जाएंगे तो इसके जिम्मेदार सिर्फ ये बच्चे या इनके घरवाले ही नहीं होंगे बल्कि आप, हम सब और हमारे समाज का ये उदासीन बर्ताव इसका जिम्मेदार होगा । मानवीय गरिमा के साथ वो जी सकें इसके लिए जरूरी है कि इल्म की रोशनी में वो अपने व्यक्तित्व को निखारें । इसके लिए मम्मी एक कदम उनके साथ चलने दीजिए । फिर वो अपनी राहें खुद बना लेंगे।

मगर....मगर ।

मैं कुछ नहीं बोल सकी । कोई भी लव्ज जेहन से जबान तक का रास्ता तय नहीं कर पाया।

- अभी तुम अपनी पढ़ाई करो । जब तुम्हारी पढ़ाई खत्म हो जाए तो जो भी चाहे करना । कल से बच्चे नहीं आएंगे । कहकर मम्मी ऊपर चली गई। ◆

क्रमश: